**सुभाषित** *स्वयंकी तरक्कीमें इतना वक्त लगा दो कि दूसरेकी बुराई करनेका वक्त ही न मिले।* ❐ **ओशो**



# घातक हुआ क्षय रोग

संक्रामक रोगोंसे सम्बन्धित मौतोंमें टीबी (क्षय रोग) एक बार फिरसे शीर्ष कारण बन गया है, जो गम्भीर चिन्ताका विषय है। पहले टीबीको बहुत घातक समझा जाता था, क्योंकि उस समय शायद ही कोई क्षय रोगी जीवनका जंग जीत पाता था। लेकिन कालान्तरमें वक्तने करवट ली और वैज्ञानिकोंके अथक प्रयाससे इस रोगका धीरे-धीरे उन्मूलन हो गया। भारतमें तो टीबी लगभग समाप्त हो गयी थी लेकिन कोरोना महामारीने टीबीको ज्यादा घातक बनानेका काम किया। इसकी घातक शक्तिका अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि कोरोना काल (२०२०-२०२२) में पांच लाखसे अधिक अतिरिक्त लोगोंकी मौत टीबीसे हुई। विश्व स्वास्थ्य संघटन (डब्ल्यूएचओ) की २०२४ में आयी टीबी रिपोर्ट हैरान और विचलित करनेवाली है। रिपोर्टके अनुसार २०२३ में दुनियाभरमें ८० लाखसे ज्यादा लोग टीबीकी चपेटमें आये, जिनमेंसे १२.५ लाख लोग काल-कवलित हुए। वर्ष २०२२ में कोरोना वायरसके बाद टीबी पूरी दुनियामें किसी संक्रामक रोगसे होनेवाली मौतका दूसरा प्रमुख कारण था। यह एचआईवी-एड्सकी तुलनामें लगभग दो गुनी मौतका कारण बनी। टीबी और कोविड-१९ दोनों ही संक्रामक रोग है, जिनका आक्रमण मुख्य रूपसे फेफड़ोंपर होता है जिससे खांसी, बुखार और सांस लेनेमें कठिनाई होती है। टीबीके लक्षण बहुत धीरे-धीरे सामने आते हैं, क्योंकि इसका इन्क्यूबेशन अवधि ज्यादा होती है, जबकि कोरोना वायरसके लक्षण १४ दिनके अन्दर सामने आ जाते हैं। दुनियामें आधेसे ज्यादा टीबीके मामले भारत, इण्डोनेशिया, चीन, फिलीपींस और पाकिस्तानमें देखनेको मिले हैं। चिन्ताकी बात यह है कि इनमेंसे २७ प्रतिशत टीबी मरीज भारतमें हैं। दूसरे नम्बरपर  दस प्रतिशतके साथ इण्डोनेशिया है, जबकि चीन ७.१ प्रतिशत, फिलीपींस सात प्रतिशत और पाकिस्तान ५.७ प्रतिशतके साथ क्रमश: तीसरे, चौथे और पांचवें स्थानपर है। पीड़ितोंमें ५५ प्रतिशत मरीज पुरुष, ३३ प्रतिशत महिलाएं और १२ प्रतिशत १४ से कम उम्रके बच्चे शामिल हैं। हालांकि भारतके स्वास्थ्य मंत्रालयकी ओरसे जारी की गयी २०२४ की टीबी रिपोर्ट राहत देनेवाली है जिसमें यह कहा गया है कि देशके टीबीके मरीज घट रहे हैं। इसपर पूर्ण नियंत्रणके लिए बड़े कदम उठानेकी जरूरत है। लोगोंको जागरूक करनेके लिए एडवायसरी भी जारी की जानी चाहिए। टीबीका कोई भी लक्षण दिखनेपर तत्काल चिकित्सकसे सम्पर्क करें। टीबी लाइलाज रोग अब नहीं है इसलिए घबरानेकी जरूरत नहीं है। समयसे इलाज शुरू होना चाहिए। इसे हल्केमें लेना घातक हो सकता है।

# आतंकी हमला

जम्मू-कश्मीरमें लम्बे समय बाद लोकतांत्रिक सरकारका गठन हुआ है और जनताकी चुनी उमर अब्दुल्ला सरकार राज्यमें शान्ति, अमन और विकासकी बात कर रही है। इससे पाकिस्तानी आतंकवादी बुरी तरह बौखला गये हैं और शान्ति और विकासको अवरुद्ध करनेके लिए लगातार हमले कर प्रवासी मजदूरों, सेनाके जवानों और सरकारी कर्मचारियोंको निशाना बना रहे हैं। शुक्रवारकी रात्रिमें उत्तरी कश्मीरके बांडीपोरमें १४ राष्ट्रीय राइफल्सके शिविरपर आतंकवादियोंने हमला कर दिया। जवानोंकी जवाबी काररवाईसे आतंकवादी भाग निकले, जबकि इससे कुछ समय पहले ही बड़गाममें आतंकवादियोंने दो प्रवासी मजदूरोंको गोली मारी थी। पिछले १६ दिनोंमें यह छठां आतंकी हमला है। इन हमलोंमें सात मजदूर, दो जवान और एक डाक्टर शहीद हो गये हैं। आतंकवादियोंकी यह साजिश बेशक सीमापारसे रची जा रही है लेकिन इन आतंकवादियोंको स्थानीय अलगाववादी तत्वोंका भी सहयोग मिल रहा है, इसलिए वे एकके बाद एक आतंकी घटनाओंको अंजाम देनेमें सफल हो रहे हैं। आतंकवादी निर्वाचित सरकारके गठनके बादसे लगातार हमलेको अंजाम देकर यह जतानेका प्रयास कर रहे हैं कि वे जनादेशके तहत बनी सरकारकी राहमें दहशतगर्दी फैलानेका हरसम्भव प्रयास करेंगे। तमाम दावों और सख्तीके बावजूद यदि जम्मू-कश्मीरमें आतंकवादकी जड़ें पूरी तरह नष्ट नहीं हो पा रही है तो इसके पीछे व्यवस्थागत कमजोरियां ही बड़ी वजह हैं। हालांकि सेना और सुरक्षाबलोंके जवान लगातार आतंकवादके खिलाफ जी-जानसे जुटे हैं लेकिन स्थानीय संरक्षणके और घुसपैठके कारण पूरी तरह सफल नहीं हो पा रहे हैं, जबकि वहांकी जनताको नयी सरकारसे उम्मीदे हैं कि वह आतंकके माहौलसे छुटकारा दिलाकर राज्यमें शान्ति और विकासका माहौल कायम करेगी। ऐसेमें जरूरी हो जाता है कि केन्द्र और जम्मू-कश्मीरकी सरकारमें समन्वय बेहतर हो और आतंकवादियोंके सफायेके लिए व्यापक कार्य योजना और नयी रणनीतिपर काम किया जाय।

## लोक संवाद

### अनुभवके शब्द

महोदय,-मरियम-वेबस्टर डिक्शनरीने नये संस्करणमें जीवनके सभी क्षेत्रोंसे अविश्वसनीय ६९० शब्द जोड़े हैं। असलमें जिस तरह बदलाव अवश्यंभावी है, उसी तरह बदले शब्दों और नये शब्दोंको आत्मसात भी करना जरूरी है। थर्स्ट ट्रैप, शेफ्स किस, ग्रैमेबल और बीस्ट मोड जैसे कई नये शब्द शब्दकोशमें शामिल किये गये हैं। इनके साथ ही डोगो, रिजए गोटेड, बुसिन और सिम्प जैसे अन्य स्लैंग भी शामिल किये गये हैं। ये शब्द क्यों शामिल किये गये हैं। आइये इन नये शब्दोंका मतलब जानते हैं। मरियम-वेबस्टरके बड़े संपादक पीटर सोकोलोव्स्कीने कहा कि हम शब्दोंके इस नये बैचसे बहुत उत्साहित हैं। उन्होंने कहा कि हमें उम्मीद है कि उन्हें पढ़नेमें उतनी ही संतुष्टि होगी, जितनी हमें उन्हें परिभाषित करनेसे मिली थी। इनका मतलब जाननेसे पहले यह जिक्र करना भी जरूरी है कि अनेक शब्दकोशमें अलग-अलग देशोंके देसज शब्दोंको भी यदा-कदा स्थान मिलता रहता है। भारतीय भाषाओंके अनेक शब्दोंको तो अकसर वैश्विक डिक्शनरियोंमें स्थान मिलता रहता है। अब आते हैं नये शब्दोंपर। सबसे पहले क्या है गर्लबॉस। डिक्शनरीमें गर्लबॉसको केवल एक महत्वाकांक्षी और सफल महिला (विशेषकर एक व्यवसायी या उद्यमी) के रूपमें परिभाषित किया गया है। वहीं प्यासका जाल एक और शब्द है, जिसका अर्थ है तुरन्त ध्यान आकर्षित करनेकी कोशिश करना। बीस्ट मोड, जिसका अर्थ है किसी व्यक्ति (जैसे कि एक एथलीट) द्वारा क्षणभरके लिए अपनायी गयी अत्यधिक आक्रामक या ऊर्जावान शैली या तरीकाको भी शामिल किया गया था। ऐसे ही क्या है डोगाका मतलब। मरियम-वेबस्टरने इसे सामान्य संज्ञाके रूपमें औपचारिक रूप दिया, जिसका अर्थ है कि युवा लोग, खासकर जब उन्हें अनुभवहीन, माना जाता है। अंतमें बना-बनाया शब्द क्रॉमुलेंटए जिसका उपयोग स्वीकार्य या संतोषजनक चीजोंका वर्णन करनेके लिए किया जाता है, को भी जोड़ा गया है। यह पहली बार नहीं है कि सिम्पसन्ससे संबंधित शब्द किसी शब्दकोशमें आया है। मरियम-वेबस्टरने २०१८ में एम्बिजेनको शामिल किया था। अब आते हैं जुज शब्दपर। शब्दकोषमें भोजनसे संबंधित शब्द भी शामिल हैं जैसे जुज जिसका अर्थ है एक छोटा-सा सुधार, समायोजन या परिवर्धन, जो किसी चीजके समग्र रूप, स्वाद आदिको पूरा करता है। टीएफडब्ल्यू (वह अहसास जब), एनजीएल (झूठ नहीं बोलूंगा) और टीटीवाईएल (बादमें आपसे बात करेंगे) जैसे शब्द भी शामिल किये गये हैं। **-अलकनंदा सिंह, वाया ईमेल।**

# ब्रिक्सके विस्तारकी उपयोगिता

**रूसके कजानमें ब्रिक्सके १६वें वार्षिक सम्मेलनके समापनपर वैश्विक समस्याओंके समाधानके लिए अनेक प्रस्ताव पारित किये गये। इस सार्वजनिक मंचपर आयोजक राष्ट्रके रूपमें रूसने सामरिक, तकनीकी और प्रौद्योगिकीय समस्याओंके संदर्भमें अपनी चिन्ता साझा की। चीनने कुछ नवीन प्रस्ताव रखे।**

**❐ विकेश कुमार बडोला**

रूसके कजानमें चौबीस अक्तूबरको ब्रिक्सके १६वें वार्षिक सम्मेलन चीनने अपनी भावी व्यावसायिक परियोजनाओंके संदर्भ कुछ नवीन प्रस्ताव रखे। उसने पर्यावरणीय संतुलन एवं अनुकूलताओंपर आधारित अपनी अनेक ऐसी विकास योजनाओंका अनावरण किया, जो ग्रीन इनीशिएटिव्स एवं वैश्विक समावेशी दृष्टियोंसे प्रेरित हैं। उसने सीमाओंपर पारस्परिक समझ, शांति, संप्रभुता एवं सम्मानकी भावनाको समझकर भारतके साथ द्विपक्षीय बैठक संपन्न की। इससे ब्रिक्सके सदस्यों देशों, विशेषकर भारतको सकारात्मक उत्साहवर्द्धन प्राप्त हुआ। भारतकी प्रमुख चिंतायें पहलेकी तरह ही थीं। चीनके साथ सीमाओंका विवाद एवं आतंकवाद जैसी समस्याएं ब्रिक्सके सदस्य देशोंमेंसे केवल भारतकी समस्याएं हैं। आतंकपर विचार करें तो यह समस्या न तो रूस, चीन, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजीलकी है और न ही ब्रिक्सके नये सदस्य देशों की। हां, जलवायु संकटकी समस्या एक वैश्विक समस्या है। इसपर भारतके विचारोंकी हर मंचपर सराहना होती है। प्राकृतिक अस्थिरता और असंतुलन विश्वकी समस्या है। इसलिए इस दिशामें जो भी देश जिस भी मंचपर सार्थक एवं उपयोगी विचार प्रस्तुत करता है, उसका अधिसंख्य देशों द्वारा बिन शर्त समर्थन किया जाता है। भारतने ब्रिक्समें ऊर्जाकी आवश्यकताओंके लिए अपनी सौर परियोजना प्रस्तुत की। दक्षिण अफ्रीका और ब्राजीलने भी अपने-अपने भू-क्षेत्रकी विभिन्न बाधाओंकी ओर ब्रिक्सका ध्यानाकृष्ट किया। भारतके अतिरिक्त सभी देशोंकी प्रमुख चिंताएं वैश्विक विकास-यात्रामें लाभके अवसर प्राप्त करके निरन्तर विकसित होनेके रूपमें ही होती हैं। आतंकवादपर चर्चा भी भारत ही करता है तथा इसके उन्मूलनकी दिशामें कार्यसूची भी भारत ही बनाता है। अन्य देश इसपर अपना चाहा-अनचाहा समर्थन प्रकट कर देते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि पूरी दुनियाके प्रमुख विकसित और विकासशील देशोंमें भारत ही ऐसा अनोखा देश है जो आतंकग्रस्त है। भारतके लिए इस आधुनिक युगमें यह एक विडंबनापूर्ण सच है। इसके लिए भारत स्वयं ही अपने पूर्ववर्त्ती शासकोंके अनुचित निर्णयोंके कारण अधि सीमातक उत्तरदायी है और आतंकके जड़मूल विनाशके लिए भारतको अपनी वैश्विक उदार दृष्टिको संकुचित करनेकी अत्यधिक आवश्यकता है।



**यदि रूस एवं चीनको अमेरिका एवं यूरोपीय देशोंके ध्रुवीकरणसे उत्पन्न चहुंमुखी बाधाओंको हटाना है तो उन्हें भारतके साथ संबंधोंकी विश्वसनीयताको बनाये रखना होगा। भारतके लिए रूस विश्वसनीय रहा है किन्तु चीनको विश्वासकी परीक्षामें निरन्तर उत्तीर्ण होते रहना होगा। भारतको भी अमेरिकाके डेमोक्रेटिक शासनकी ओर आवश्यकतासे अधिक उदार होनेसे बचना होगा। समग्र विश्वको याद रखना होगा कि दुनियामें आज इसरायलके विरुद्ध फिलीस्तीन, ईरान इत्यादि मध्य यूरोपीय देशोंका युद्ध और यूक्रेनके विरुद्ध रूसका युद्ध डेमोक्रेट अमेरिकी शासनकी समयावधिमें ही आरम्भ हुए हैं।**

वैसे समग्र परिप्रेक्ष्यमें देखें तो इस वर्षकी ब्रिक्स शिखर बैठक गत सभी बैठकोंसे अधिक उपयोगी रही। ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, इन पांच राष्ट्रोंका यह समूह अपनी डेढ़ दशकीय सामूहिक उपस्थिति द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तरपर एक अति महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुका है। गत सौसे भी अधिक वर्षोंसे विकसित तथा विकासशील राष्ट्रोंके समूहोंमें विभाजित रहा विश्व, ब्रिक्सके निरन्तर साकार होते रहनेके कारण एक तृतीय वैश्विक सामूहिक-धुरीके स्वरूपमें स्थापित हो चुका है। समूह-२० तथा समूह-७ जैसे वैश्विक संघटन इस समय ब्रिक्सके सम्मुख अप्रभावी प्रतीत हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद्, अंतरराष्ट्रीय विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा विकसित राष्ट्रोंके प्रत्यक्ष हस्तक्षेपसे परिचालित अनेक अन्य वैश्विक संघटन ब्रिक्स एवं इसकी सहायक संस्थाओं द्वारा उत्पन्न समुचित प्रतिस्पर्द्धापरक वातावरणमें किंकर्त्तव्यविमूढ़ हैं। ब्रिक्सके इसी प्रभावसे प्रेरित होकर ईरान, मिस्र, इथियोपिया और संयुक्त अरब अमीरात १ जनवरी २०२४ से इसके सदस्य देश बन गये हैं। कजान सम्मेलनमें ये सभी नवनिर्वाचित सदस्य देश उपस्थित थे। सउदी अरब भी ब्रिक्सका सदस्य देश बननेकी दिशामें अग्रसर है। हालांकि वह अभी निमंत्रित सदस्यके रूपमें ही बैठकमें सम्मिलित था। तुर्की सहित ३० से अधिक देश ब्रिक्सके सदस्य बनना चाहते हैं। किन्तु यह दीर्घ प्रक्रिया है। इसमें समय लगेगा। ब्रिक्सकी उपस्थितिसे विश्वमें गुटसापेक्षताका एक अप्रत्याशित संतुलन स्थापित हुआ है। यह कैसे न होता! क्योंकि विश्वकी भू-सतहका लगभग ३० प्रतिशत तथा वैश्विक जनसंख्याका ४५ प्रतिशत, संस्थाके सदस्य राष्ट्रोंके पास है। दक्षिण अफ्रीका, अफ्रीकी महाद्वीपकी सर्वाधिक बृहत् अर्थव्यवस्था है। ब्राजील, भारत एवं चीन जनसंख्या, क्षेत्रफल एवं सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) तथा क्रय शक्ति समताके आधारपर दुनियाके दस सर्वाधिक अग्रणी राष्ट्रोंमेंसे हैं। रूस वर्तमान वित्तीय वर्षमें यूरोपकी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है। संस्थाके सभी पांच प्रारंभिक सदस्य देश जी-२० के सदस्य भी हैं, जिनकी संयुक्त रूपमें २०२४ में अंकित जीडीपीका मूल्य २८ ट्रिलियन अमेरिकी डालर (अर्थात् सकल वैश्विक उत्पाद का लगभग २७ प्रतिशत) है। इनकी कुल जीडीपी (क्रय शक्ति समता) लगभग ६५ ट्रिलियन अमेरिकी डालर (वैश्विक जीडीपी अर्थात् क्रय शक्ति समताकी ३३ प्रतिशत) है तथा २०२४ के अनुसार इनके पास अनुमानित ५.२ ट्रिलियन अमेरिकी डालर मूल्यका संयुक्त विदेशी भंडार है। बहुपक्षकी भावनाको प्रगति, विकास एवं जीवनगत सुविधाएं प्रदान करनेके साथ सशक्त करनेके ध्येय वाक्यके साथ आरंभ हुई १६वीं ब्रिक्स सभामें विमर्शके प्रमुख विषयोंमें वैश्विक शांति, युद्ध विराम, आतंक रोधन, स्वस्थ पोषाहार एवं शुद्ध पेयजल आपूर्ति, सार्वजनिक जीवन एवं स्वाथ्य वृद्धिके लिए जलवायु संकटका निवारण, डिजिटल सुविधापर व्यावसायिक एवं जीवनकी समस्त गतिविधियोंकी निर्भरता हेतु इंटरनेट चालित नवोन्नत प्रौद्योगिकियोंको हैकिंग बाधाओंसे मुक्त करना, ब्रिक्स बैंकके माध्यमसे सदस्य देशोंकी वैकासिक परियोजनाओंके लिए ऋण वितरण प्रक्रियाको सुगम एवं सरल बनाना, वैश्विक शांतिके लिए किये जा रहे प्रयासोंमें गंभीरतापूर्वक योगदान देना इत्यादि विषय सम्मिलित थे।

नये सदस्य देशोंका ब्रिक्सके साथ आना अभी महत्वूपर्ण तो नहीं समझा जा सकता है, किन्तु हां नवविस्तारके स्वरूपमें ब्रिक्स अब जी-७ को भूराजनीतिक, आर्थिक, कूटनीतिक और सामरिक नीतियोंके आधारपर प्रतिस्पर्द्धा देनेके लिए प्रतीक स्वरूपमें तो स्थापित हो ही गया है। रूस और भारतकी संबंधपरक अनुकूलताके प्रभावमें चीन भी प्रेरित है। इसी प्रेरणासे प्रभावित होकर उसने ब्रिक्स सम्मेलनसे पृथक भारतके प्रधान मंत्री मोदीके साथ द्विपक्षीय वार्ताका अनुकूल वातावरण बनानेकी भावनाओंके साथ भारत-चीन सीमाओंपर विवादोंको शांतिपूर्ण विधिसे हल करनेके महत्वपूर्ण अनुबंधोंपर हस्ताक्षर भी कर दिये हैं। इस प्रकरण द्वारा ये अनुमान लगाना तो अनुचित होगा कि चीन भविष्यमें हर स्थितिमें भारतके प्रति आदर्श व्यवहारकी नीतिपर स्थिर रहेगा किन्तु इतना तो अवश्य हुआ कि भारतके लिए उसकी उग्रता अधिसीमातक कम हुई है। ब्रिक्सके लिए यह वार्षिक सम्मेलन संघटनके विस्तारीकरणकी उपलब्धि तथा वैश्विक अस्थिरताओंकी चुनौतियोंके मध्य सार्वभौमिक संतुलन स्थापित करनेकी अनिवार्यता, दोनों ही रूपोंमें संपन्न हुआ है।

रूसका आतिथेय ब्रिक्सके लिए तब अधिक अनुकूल एवं वैश्विक कल्याणके ध्येयकी दिशामें प्रतीत होता, यदि वह यूक्रेनके साथ युद्धविरामके लिए त्वरित प्रयास करता। हालांकि भारतीय प्रधान मंत्रीने रूसको युद्धसे बचने एवं शांतिके मार्गपर प्रशस्त होने तथा साथ ही चीनको भी पारस्परिक संबंधोंको शांतिपूर्ण एवं सम्माननीय बनानेकी स्पष्ट सलाह दी तो है, किन्तु इस युक्तिके लिए ये दोनों देश कितने गम्भीर हैं, यह भविष्य ही बतायेगा।

यदि तटस्थतापूर्वक १६वीं ब्रिक्स सभाका समाकलन किया जाय तो यही प्रतीत होता है कि यह सभी अबतककी सबसे महत्वपूर्ण सभा रही। महत्वके दो बिन्दु तो स्पष्ट दिखाई देते हैं। प्रथम, चार नये देशोंका ब्रिक्समें सम्मिलित होना। द्वितीय, हिन्द प्रशांत क्षेत्रमें चीन, रूस एवं भारतके संबंधोंमें एक नयी ऊर्जा एवं विश्वासका परिलक्षित होना। यदि रूस एवं चीनको अमेरिका एवं यूरोपीय देशोंके ध्रुवीकरणके कारण उत्पन्न चहुंमुखी बाधाओंको हटाना है तो उन्हें भारतके साथ संबंधोंकी विश्वसनीयताको बनाये रखना होगा। भारतके लिए रूस तो विश्वसनीय रहा है किन्तु चीनको विश्वासकी परीक्षामें निरन्तर उत्तीर्ण होते रहना होगा। भारतको भी अमेरिकाके डेमोक्रेटिक शासनकी ओर आवश्यकतासे अधिक उदार होनेसे बचना होगा। भारत ही नहीं, समग्र विश्वको याद रखना होगा कि दुनियामें आज इसरायलके विरुद्ध फिलीस्तीन, ईरान, इत्यादि मध्य यूरोपीय देशोंका युद्ध और यूक्रेनके विरुद्ध रूसका युद्ध डेमोक्रेट अमेरिकी शासनकी समयावधिमें ही आरम्भ हुए हैं। उल्लेखनीय हो कि रिपब्लिकन ट्रम्पके राष्ट्रपति रहते-रहते दुनियामें कहीं भी युद्ध नहीं हो रहे थे। ब्रिक्सका मंच, सदस्योंके रूपमें भारत एवं चीनकी उपस्थितिसे दक्षिण एशियाका प्रभावशाली मंच प्रतीत होता है। रूस भी हमारे एवं चीनके प्रति संतुलित ही रहता आया है। अत: इन तीन देशोंके शक्तिशाली नेतृत्वमें ब्रिक्स संघटन न केवल सभी सदस्य देशों, बल्कि शांतिके साथ प्रगतिकी ओर उन्मुख देशोंके लिए भी बहुमुखी रूपमें उपयोगी एक संघटन सिद्ध हो सकता है।

# वातायनमें शीत-तापका प्रेम प्रसंग

**तीन दिन पूर्व भारतमें दीपपर्व था। वातावरण मधुवाता। कुछ दिन पहले गर्म हवाके झोंके थे। वर्षा रानी भी गरज बरस कर चली गयीं। धनतेरसपर खरीदारी भी हुई। भारतने अपनी करेंसीको रुपया कहा। मुद्राका रुपया नाम और भी दिलचस्प है।**

**❐ हृदयनारायण दीक्षित**

भारतीय करेन्सी रुपया है। रुपया नाम दिलचस्प है। रुप-या संस्कृतसे आया है। रुप-याका अर्थ हुआ, जो रूप है। रुपया बड़ा मजेदार है। आकर्षण भी है। रूपमें यह कागज है। इस रूपके भीतर समस्त भौतिक वस्तुएं छिपी हैं। यहां रुपया दो, जो पसंद है वह लो। रुपया बड़ा शक्तिशाली है। ऋग्वेदमें उचित ही मुद्राको देवताओं जैसा शक्तिशाली बताया गया है। तरह-तरहके रूप धारण करना। रुपया बहुरूपया है। धनतेरस और दीपावली लक्ष्मी आराधनाकी मुहूर्त है। लक्ष्मी मनुष्यको धनार्जन शुभ लाभ देती हैं। अर्थशास्त्रमें उद्यमीको साहसी बताया गया है। वह साहस करता है, कारखाना वगैरह लगाता है। साहसका प्रतिफल पाता है। शुभ लाभ भारतीय चिन्तनका विकास है। लाभमें श्रमिकोंका शोषण, टैक्सचोरी और भ्रष्टाचार भी शामिल है। शुभ लाभ ईमानदार उद्यमीका हिस्सा है। पर्व त्योहार दिक् और कालके भीतर हैं। देव प्रकाशवाची हैं। जहां-जहां ज्योतिर्गमय प्रकाश, वहां-वहां दिव्यता और वहां-वहां देवता। हम भारत हैं। भा अर्थात् प्रकाश, रत यानी संलग्न। माना जाता है कि प्रकाश और अंधकारका संघर्ष सनातन है। लेकिन यह सही नहीं है। अंधकार और प्रकाश दो नहीं हैं। प्रकाशका शून्य हो जाना अंधकार है। इसी तरह अंधकार शून्य होना प्रकाश है। सूर्य प्रकाश पुंज है। उन्हें नमस्कार हमारी संस्कृति है। हम चन्द्रको अर्ध्य देकर पूंजते हैं। चन्द्र ब्रह्माण्डका मन है। पूर्णिमाका प्रकाश उपास्य है। दूसरे ही दिनसे चांद घटने लगता है और अमावसतक रोजाना घटता है। अमावस परिपूर्ण अंधकार रात्रि है। अगले दिनसे अंधकार पिटता है, प्रकाश बढ़ता है, १५ दिन बाद पूर्णिमा आती है। पूनो (पूर्णिमा) का चन्द्र अपनी पूरी आभा, प्रभा दीप्ति और प्रीतिके साथ खिलता है। भारतने प्रत्येक पूर्णिमाको उत्सव बनाया। अषाढ़ पूर्णिमाका चन्द्र बादलोंसे भी ढकता है। लेकिन उन्मुक्त चमकता है सो इस रात गुरु पूर्णिमा। श्रावणकी पूर्णिमा रक्षाबंधन होती है लेकिन शरद् चन्द्रका क्या कहना। बहुत दूर आसमानमें बैठा शरद् चन्द्र धरतीकी प्रीतिमें अमृतघट उलीचता है, भारतने शरद् पूनोके चन्द्रको बहुत प्यार किया है। वैदिक ऋषि सौ शरद् जीनेके अभिलाषी थे-जीवेम शरदं शतं। सौ शरद् देखना भी चाहते थे-पश्येम शरदं शतं।

कार्तिक अमावस्याका अंधकार बाकी अमावसोंसे ज्यादा गाढ़ा और गहरा जान पड़ता है। भारतने प्रगाढ़ अंधकार वाली इस रात्रिको दीपोत्सव बनाया। शरद् पूर्णिमाकी रात रस, गंध, दीप्ति, प्रीति, मधु, ऋत और मधुआनन्द तो इसके ठीक बाद झमाझम दीपमालिका। कार्तिकी अमावसका अंधकार प्रकाशकी अनुपस्थिति ही नहीं होता। माना जाता है कि यह अस्तित्वगत होता है, अनुभूति प्रगाढ़ हो तो पकड़में आता है। जहां-जहां तमस् वहां-वहां प्रकाश-दीप। प्राचीन पूर्वजोंकी कर्मशक्तिका रचा गढ़ा तेजोमय प्रकाश है। प्रकाश ज्ञानदायी और समृद्धिदायी भी है। भारत दीप पर्वकी रात-रात केवल भूगोल नहीं होता। भारत इस रात दिव्य दीपशिखामय दिखता है। वातायनमें शीत और तापका प्रेम प्रसंग चलता है। घर, आंगन, तुलसीके चैबारे, गरीब किसानके दुवारे, खेत-खलिहान, नगर, गांव, मकान, दुकान, ऊपर नीचे सब तरफ दीप शिखा। तुलसीदासने रामचरितमानस उत्तर काण्डमें दीप शिखाका रूपक बनाया है। वे सात्विक श्रद्धाको गाय बताते है, जपतप नियमको गायका चारा। फिर इस गायसे परम धर्ममय दूध निकालते हैं। निष्काम भावकी अग्निपर उबाल कर धैर्य आदि भावोंसे ठंडा कर दही बनाते हैं। इस दहीसे मुदिता मथै विचार मथानी के जरिये मक्खन निकालते हैं। इस मक्खनको योग अग्निपर गरम कर ज्ञान घृत पाते हैं। चित्तके दिया (दीपक) में इस घीको डालते है। तीन गुण तीन अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति) से परे तुरीय अवस्थाकी बाती सजाते हैं। तुलसीदास बताते हैं कि यह दीपक विज्ञानमय है-एहि विधि लेसे दीप, तेज राशि विज्ञानमय। फिर कहते हैं, सोहमस्मि इति वृत्ति अखण्डा/दीपशिखा सोई परम प्रचण्डा। दीपशिखाके प्रकाशमें जीव ब्रह्म हो जाता है, 'आत्म अनुभव सुख सुप्रकाशा।' तुलसीके सौन्दर्यबोध (बालकाण्ड) में भी दीपशिखा है 'सुन्दरता कहु सुन्दर करई/छविग्रह दीपशिखा जनु बरई। दीपशिखा भारतका मन है। सभी साधकोंके लिए दीप मालिका भारतके मनकी स्वर्णमय दीपशिखा है। दीपक अपना हृदय-स्नेह (तेल) उड़ेलता है, बाती जलाता है। तब अंधकारसे लड़ता है, प्रकाश देता है। दीपकके नीचे अंधेरा रहता है लेकिन दूसरोंका तमसावृत पथ प्रकाशवान होता है।

दीप पर्व स्वाभाविक ही लक्ष्मी गणेशका नीराजन मुहूर्त बना। ऋग्वेदके रचनाकालमें गण (समूह) थे। प्रत्येक गणका एक गण प्रमुख या गणपति होता था और एक आराध्य देवता यानी गण-ईश था। ऋग्वेदमें बृहस्पतिको गणपति कहा गया है, गणानां त्वां गणिपतिं हवामहे-आप गणोंके गणपति हैं। ये गणपति प्रकाशदाता भी हैं। ऋग्वेदके गणपति कवि हैं, विद्वान है लेकिन यजुर्वेदके गणपति निधिपति भी है.निधीनां त्वा निधिपति। दीप-उत्सव है अतिरिक्त आनन्दका अतिरेक। सम्पूर्णताका केन्द्र है उत्स। उत्सव इसी केन्द्रकका उफनाया आनन्द है। लेकिन उत्सव उल्लास नहीं रहे। पहले उत्सवकी खबर ऋतु देती थी, माह और तिथि उत्सवोंकी सूचना थे, अब उत्सवकी खबर अखबारी विज्ञापन देते हैं। विज्ञापन नया स्वप्न संसार देते हैं। बाजारी वस्तुएं उत्सवका विकल्प नहीं हो सकती। बाजारमें मादक क्रान्ति है। उत्सवी मानुष हलकान है। करें तो क्या करें। दीपावली नाकका सवाल बन गयी है। खरीददारी स्टेटस सिम्बल है। जिसने खरीददारी नहीं की, वह उत्सवसे बाहर हो गया।

छान्दोग्य उपनिषद्के अनुसार सृष्टिका समस्त सर्वोत्तम और पुरुषोत्तम प्रकाशरूपा है। परम तेजोमय सूर्य हैं। वे सहस्त्र आयामी प्रकाशरूपा हैं। गीताके अर्जुनने विश्वरूप देखा, उसके मुंहसे शब्द फूटे दिव्य सूर्य सहस्त्राणि-सहस्त्रों सूर्योंका प्रकाश एक साथ जगमगा उठा। उपनिषद्के ऋषियोंने परमसत्ताकी अनुभूतिको प्रकाशरूप ही पाया। कठोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् एवं श्वेताश्वतर उपनिषद्में एक साथ गाये गये मंत्रमें कहते हैं, न तत्र सूर्यो भाति, न चन्द्रतारकमध्नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्नि। वह न सूर्य चमकते हैं और न चांद तारे। बिजली भी नहीं, अग्निकी बात है क्या है। बताते हैं, तमे भान्तमनुभाति सर्वं उसीके प्रकाशसे यह सब प्रकाश है। तस्य भासा सर्वम् इदं विभाति। उसीकी दीप्तिसे यह सब प्रकाशित हैं। प्रकाश अमरत्व है, अज्ञान मृत्यु। वृहदारण्यक उपनिषद्के ऋषिकी प्रार्थना है, असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमयेति। हम असत्से सत्, तममसे ज्योति और मृत्युसे अमरत्वकी ओर चलें। ऋग्वेदके अंतिम सूक्तमें कहते हैं, हम साथ-साथ चलें। साथ साथ वार्ता करें। हमारे सबके मन एक सामान हों। सामूहिकताका भाव भी उत्सव है। भारतकी ज्योतिर्गमय आकांक्षा चिरन्तन है।

## आत्मबोध

### सिमटता समाज

**❐ जे.पी.शर्मा**

पूर्व युगोंके कालखंडोंमें व्यक्ति एवं समाजकी सहसंबंधता चरमोत्कर्षपर होती थी। व्यक्ति सामाजिक सरोकारोंके बिना जीवनयापनकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। जन्म लेनेसे पालन-पोषण और वयस्क होनेतक जीवके सामाजिक सरोकार, सामुहिक संबंधताएं प्रारम्भ हो जाती थी। तब सांझीवार्ताके दौरान ही लड़के-लड़कियोंके रिश्ते भी तय हो जाते थे। सर्वधर्म त्योहार, परम्पराएं, उत्सव सभी मिलजुल आपसी सहयोग एवं अंशदान सहित पूरे जोशसे मनाते, शादी समारोह एवं शोकसभाएं धार्मिक एवं सामुदायिक स्थलोंपर बिना खर्च आयोजित की जाती। सभीके शरीक होनेके परिणाम स्वरूप सुख मनानेके जोशसे प्रसन्नता दूनी हो जाती। गम एवं दुख आधा रह जाता। पत्र व्यवहार, औपचारिक इकट्ठोंपर मिलन, रिश्तेदारों, मित्रों, संपर्कों पड़ोसियोंका संक्षिप्त अंतरालपर मिलना-जुलना प्रचलनमें था। परन्तु विडंबना यह है कि इन सभी श्रेष्ठ मानवीय मूल्योंके विपरीत ज्यों-ज्यों डिजिटल प्रगतिशील वैज्ञानिक उपकरणोंका जमाना आता गया, मानवताकी अधोगति होती गयी, संवेदनाओंका अवमूल्यन होता गया, इनसानियत शर्मसार होती चली गयी, आवेग, संवेग, अहसास, जज्बात, भावनाएं पृष्ठभूमिमें जाकर प्राय: लुप्त होने लगी, सहसंबंधताएं औपचारिकताओंमें तबदील हो गयी, परस्पर भाईचारा कुंठित एवं कुप्रभावित होता चला गया, परमार्थपर स्वार्थ हावी होता गया, पत्र व्यवहार, परस्पर मिलना-जुलना, इकट्ठे मिल-बैठ दुख-सुख, सांझे करना अतीतकी बात हो गयी। मोबाइल, फेसबुक, वॉट्सएपपर जनता कुछ यूं चिपकी कि चिपकती ही चली गयी। न्यायालय द्वारा नोटिस चस्पा होनेकी ताकतसे भी ज्यादा ईश्वरप्रदत्त मासूम मानवता मोबाइलसे कुछ इस कद्र चस्पा हो गयी कि सभ्य समाजने मानो सामाजिक सौहार्द, परस्पर सरोकार, सामुदायिक भावना, उच्च मानवीय मूल्यों, अंतरंग सहसंबंधताओं, संवेदनाओं, अहसासों, जज्बातों, संवेगों, भावनाओंपर ही प्रश्न चस्पां कर दिया हो। फेसबुकने मानो मानवताका अपहरण कर उसे किसी नामालूम अंधेरे शून्यकोनेमें सदाके लिए दफन ही कर दिया हो। यद्यपि अन्वेषित वैज्ञानिक उपकरणीय संचार प्रणालियोंके लाभोंसे नि:संदेह इनकार नहीं किया जा सकता, तथापि इन्होंने अपनी उच्च गुणवत्ताके बावजूद इनसानी संवेदनाओं, मानवीय मूल्यों समाजिक सरोकारोंकी जो अधोगति एवं अवमूल्यन किया हो उसे भी आंखें मूंद नकारा नहीं जा सकता। श्रेयस्कर होगा कि आधुनिक तकनीकी उपकरण सीमित हो, ताकि मनुष्य समाजिकतासे भी जुड़ा रहे।

# अमेरिकाके चेहरेको बेनकाब करता चुनाव

**❐ वाई. योगेन्द्र**

अमेरीकाके चुनावको देखनेके तीन नजरिये हो सकते हैं। पहला, बाकी दुनियाकी तरह हम खाली बैठे उत्सुकतासे चुनावके परिणामका अनुमान लगा सकते हैं, मानो यह इंगलैंड और ऑस्ट्रेलियाका टैस्ट मैच हो। अमरीकी राजनीतिके विद्वानोंकी राय मानें तो इस बार कांटेकी टक्कर है। रिपब्लिकन पार्टीकी तरफसे दूसरी बार राष्ट्रपति चुने जानेके दावेदार डोनाल्ड ट्रम्प और डैमोक्रेटिक पार्टीकी ओरसे निवर्तमान उप राष्ट्रपति और पहली बार राष्ट्रपतिके चुनावमें उतरी कमला हैरिस दोनोंको लगभग एक बराबर वोट मिलनेकी संभावना है, ४५ प्रतिशतके आसपास। अनुमान है कि वोटोंमें कमला हैरिस दोसे तीन प्रतिशत आगे रह सकती हैं। लेकिन अमेरिकाकी चुनाव पद्धति इतनी अजीब है कि अधिक वोट आनेके बावजूद कमला हैरिसके चुनाव हारनेकी संभावना ज्यादा है। दूसरा नजरिया एक चिंतित विश्व नागरिकका होगा। हम चिंता कर सकते हैं कि डोनाल्ड ट्रम्प जैसी अखड़ दिमाग दुनियाके सबसे ताकतवर देशका राष्ट्रपति बननेका पूरी दुनियापर क्या असर पड़ेगा। लेकिन सच यह है कि हमारी चिन्ता करनेसे कुछ होनेवाला नहीं। यूं भी, जो भी अमेरिकी राष्ट्रपति बने, हमारे जैसे देशोंको कोई खास फर्क पड़नेवाला नहीं। अमेरिकी चुनावपर एक तीसरा नजरिया भी हो सकता है, एक ठेठ हिन्दुस्तानी नजरिया। बेगानेकी शादीमें अब्दुल्ला दीवाना बननेकी बजाय हम दूरसे इस चुनावको देखें और सीखें। अमेरिकाके चुनावी घमासानके चलते अचानक अमेरिकी सपनेका सुनहरी पर्दा गिर गया है और उसका फायदा उठाकर पूरी दुनियाको लोकतंत्रका उपदेश देनेवाली जन्नतकी हकीकत देखनेका मौका न छोड़ें। इस नजरसे देखनेपर हमें सबसे आगे डोनाल्ड ट्रम्प नामक महाशय मिलेंगे, जिनके साथ आधा अमेरिका खड़ा है, आधेसे ज्यादा श्वेत और मर्द मतदाता खड़े हैं, ऐलन मस्क जैसे रईस खड़े हैं। जब आप इन महाशयकी जन्मकुंडलीपर नजर दौड़ाते हैं तो पाते हैं कि दुनियाका कोई ऐसा कुकर्म नहीं, जिससे इन्हें परहेज रहा हो। डोनाल्ड ट्रम्पने रियल एस्टेट और बिल्डरके कामसे ६६० करोड़ डालर (लगभग ५५००० करोड़ रुपये) का साम्राज्य बनाया है, टैक्स फ्रॉडमें पकड़े जा चुके हैं। अपने बिजनैसके अलावा झूठ और नफरतका धंधा खुलकर चलाते हैं। गैर-श्वेत आप्रवासियोंके बारेमें खुलकर अफवाह फैलाते हैं। हालमें उन्होंने कहा कि अमेरिकामें आये मैक्सिकन आप्रवासी कुत्तों-बिल्लियोंको खा रहे हैं। बात झूठी निकली लेकिन ट्रम्प सच और झूठके बीच कोई भेद नहीं करते। अमेरिकाका मीडिया ट्रम्पके झूठको झूठ बतानेमें कोताही नहीं करता।

डोनाल्ड ट्रम्प औरतोंके मामलेमें बदनाम हैं, तीन बार शादी की है, दर्जनों अफेयर रहे, औरतोंके बारेमें खुलकर अश्लील टिप्पणियां करते रहे हैं। जुबान बेलगाम है। उनके साथ व्यापारमें, राष्ट्रपति कार्यालयमें और पार्टीमें काम करनेवाले अनगिनत लोग उनकी बेईमानी, बदमजगी, बेवकूफी, बदतमीजी और बेहयाईकी शिकायत कर उनका साथ छोड़ चुके हैं। यही नहीं, पिछली बार २०२० में राष्ट्रपति चुनाव हारनेके बाद ट्रम्प साहबने अपने समर्थकोंको राजधानी और संसद भवनपर हमला करनेके लिए उकसाया, वहां बलवा कराया और अमेरिकी इतिहासमें पहली बार तख्ता पलटनेकी कोशिश करवायी। यह सब कोई खुफिया आरोप नहीं हैं। यदि आप विकीपीडिया चैक करेंगे तो ट्रम्प साहबके कारनामोंकी अलग-अलग ७९ एंट्रीज मिलेंगी। आप सोचेंगे कि ऐसी छविवाला व्यक्ति सार्वजनिक जीवनमें बचा कैसे है। यह सवाल आपको मंचकी दूसरी तरफ ले जायगा, जहां आपको इक्यासी सालके एक बुजुर्ग जो बाइडेन मिलेंगे। खोये-खोयेसे, लड़खड़ाते हुए यह सज्जन इस वक्त अमेरिकाके राष्ट्रपति हैं, दुनियाकी सबसे ताकतवर फौजके कमांडर हैं। कुछ महीने पहलेतक डोनाल्ड ट्रम्पके सामने डैमोक्रेटिक पार्टीके उम्मीदवार भी थे। वह तो भला हो एक टीवी डिबेटका, जिसमें ट्रम्पसे बहस करते हुए बाइडेन साहबकी मानसिक अवस्थाकी कलई खुल गयी और उनके समर्थकोंको उन्हें बीच रास्ते इस दौड़से बाहर निकालना पड़ा।

अब डोनाल्ड ट्रम्पका मुकाबला कर रही हैं कमला देवी हैरिस। भारतीय मूलकी तमिल मां और जमैकाके अश्वेत पिताकी संतान कमला एक अश्वेत महिला हैं, पढ़ी-लिखी हैं, शारीरिक और मानसिक रूपसे स्वस्थ हैं और बोलनेमें चुस्त। उनकी पृष्ठभूमिसे आप यह न समझ लें कि उन्हें भारत या तीसरी दुनियाके अश्वेत लोगोंसे कोई हमदर्दी है। इस मायनेमें वे अमेरिकी मुख्यधारा राजनीतिकी प्रवक्ता हैं, इसरायलकी समर्थक, दुनियामें अमरीकी दादागिरीकी वकालत करती हैं और अमेरिकाके भीतर थैलिशाहोंके साथ हैं। उनपर कोई बड़ा आरोप नहीं है। न कुछ बुरा करनेका, न कुछ अच्छा करनेका। न बुरा बोलनेका, न अच्छा सोचनेका। तमाम बड़े नेताओंकी तरह वह भी विचार मुक्त हैं। यह है विकल्प अमेरिकाकी जानताके सामने। यदि आप दुनियाके हाशियेपर बैठकर अमेरिकी चुनावमें झांकेंगे तो आप समझेंगे कि असली सवाल यह नहीं है कि अमेरिकी चुनावमें कौन जीतेगा। सवाल यह है कि अमेरिकाका चुनाव इन विकल्पोंतक क्यों सिमट गया है। डोनाल्ड ट्रम्प जैसा व्यक्ति दूसरी बार राष्ट्रपति बनानेके करीब क्यों पहुंच गया है। क्या अमेरिकी समाजका रातों रात इतना पतन हो गया है। यानी हमें अचानक अमेरिकी समाजका पूरा सच देखनेका मौका मिल गया है। क्या ट्रम्प एक औसत अमेरिकीकी दबी-छिपी कुण्ठाओं और अमेरिकी चरित्रकी अभिव्यक्ति हैं या दुनियाभरमें अब महामानव नेताओंसे पिंड छुड़ाकर औसतकी पूजाका युग शुरू हो गया है। जैसा अरस्तुका डर था, क्या लोकतंत्र भीड़तंत्रमें बदल रहा है।